अधयाय - 4

राधिका देवी श्रीवास्तव

राधिका देवी श्रीवास्तव के जनम उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जनपद में सन् 1931 ई० में भइल रहे। बियाह के बाद अपना पति के साथे रह के साहित्य रत्न कइली। शुद्ध उच्चारण के चलते विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सान्निध्य पवली आ जापानी कवि येन नागुची के अभिनंदन करे के मौका मिलल। इहाँ एगो कहानी संग्रह 'धरती के फूल' (प्र०-1968 ई०) छपल बा। अर्थाभाव के कारण 'बधरिया मोती झरे' (कविता) आ 'झलकारो' कहानी-संग्रह प्रकाश में ना आ सकल। इनका दूगो कहानियन के बर्मी आ रूसी भाषा में अनुवादो भइल बा। इनका कहानियन में भोजपुरी इलाका के गाँवन के दाव-पेंच आ सामाजिक विसंगतियन पर व्यंगात्मक प्रहार देखे के मिलला। इनकर निधन 21 जनवरी 1986 ई० के भइल।

विषय प्रवेश

'धरती के फूल' में लेखिका कहानी के अंत पाठक के आशा के विपरीत कके ओकरे एगो जोरदार झटका देले बाड़ा एह कहानी के अंत (ट्रिक ऐंन्डिंग फार्मूला) चमत्कारी तरीका से होत बा रमरतिया आ महेसर के मन में पाकत खिंचड़ी के अंदाज पाठक के नइखे लागत। धरती के फूल तूरे खातिर रमरतिया के महेसर के खेत में गइल, महेसर के धरती के फूल तूर के रमरतिया के फांड़ भर देहल आ रमरतिया के मुस्कुरा के जबाव देहल पाठक के प्रेम के धारा में बहा देत बा बाकिर कहानी के आखिरी वाक्य बगली में से एक रोपेया के नोट निकाल के ओकरा अँचरा के खूँट में बान्ह देले। ''अब महेसर के नजर धरती के फूल पर रहे, ओकरा रूप पर ना'' इ वाक्य कहानी के पूरा तेवर बदल देत बा आ कहानी पूर्णता प्राप्त कर लेत बिया।

धरती के फूल

भर फाँड़ धरती के फूल तुरले रमरतिया महेसर का मसुरिया का खेत में से निकललि। महेसर का बुझाइल जे मसुरिया के बाले तुरे ले ले जातीया। बाकी त महेसर ओकरा से कुछ बोलले ना। सोचले कि असहीं ढिल्ली देवे के काम बा। रमरतिया महेसर के दिख के मुसकिआत मुंड़ी गड़ले घरे चल गइलि।

धरती के फूल बरसात बीतला पर धूस माटी में मसुरिया का खेत-बोत में जामेला। धरती के फूल पहिले ऊजर डाँटी नियर उगेला। माथा प फूल के कोढ़ी रहेला। बीता भके होत-होत कोढ़िया फूला के छितनार हो जाला। फरका से देखला प ऊजर-ऊजर छात्ता अइसन लागेला। एही से एकरा के साँप के छातो लोग कहेला। धरती के फूल जहवाँ जामेला, एके जगहा बनबना के बिरन्ही का खोंता अस जामेला। एकर तरकारी बड़ा सवदगर होला। गरम मसाला-बोसाला देके ठीक से बनवला प उड़ चलेला, सालन के मुँह मार देला। सालन-मछरी ना खाये वाला लोग एकरे से आपन टिसुना बुझावेला।

रमरतिया के बाप खाये-पीये में बड़ा सवखीन रहन। खाहीं-पीये में अपना धन के छूह उड़ा देलन। खेंत-बारी सभ बीका गइल। खाली एगों मकाने भर बाँच गइल रहे, जवना में अपना मेहरारू, एगो बेटी रमरतिया आ आँख के लकड़ी एगो टेल्हा रतन का साथे जिनिगी के दिन-रात गांथत रहन। आठ गो लइकी-लइका के मार के रमरतिया आ रतन, बड़ा धरछना से जीयल रहन। रमरतिया के उमिर उठानी प रहे। एक उमिर में कवनो लइकी का देहि प सुघराई छलके लागेले, जवानी उभारि के कसमखाये लागेले, रूप निखरि के नाचे लागेला। रमरतिया त अपनही सई लइकी में एक लइकी रहे। पातर छरहर देहि, चलला प जवानी का भार से डाँड़ा काँच कइनि अस लचक जाता रहे। खनहन गोराई, मुँह के गोलाई आ सुघराई देखि के चनरमो लजा जात रहन। रमरतिया के रूप भगवान अपने हाथ से सँवरले रहन। फेर रमरतिया के का पूछे के, देखिनिहार का धरनिहार लाग जात रहे। नवही लोग मूरछा जात रहे, बूढ़-पुरनिया लोग के छाती फुल उठत रहे, आँखि जुड़ा जात रहे।

रमरतिया पूरा बुझनउक हो गइलि रहे। बाप का मन के बात के अटकर लगा लेत रहे। ओकरा ई बात बराबर सदत रहत रहे कि बाबूजी एह बिकराल महँगी दें हमनी में खियावे-पीयावे का पाछा अपना टिसुना के मारि के सवलान भइल रहतारे। नाहीं त, बे सालन-मछली के एको दनि उनका अन्न ना रूचत रहे। एही से ऊ ओह दिन धरती के फूल, तरकारी बनावे खातिर ले आइलि रहे आ सोचले रहे कि गाहे-बेगाहे धरतीये का फूल के तरकारी बना के दी जवना से उनकर हीक बुताउ। महेसर का खेतवा में ई खूब फुलाइलो रहे आ महेसर का रोक-टोक ना कइला से ओकर मनो बढ़ि गइल रहे।

महेसर अपना बाप-मतारी के दुलरूआ लइका रहे। इंटरेन्स में फेल भइला प घरहीं रहिके खेती-गिरहती देखत रहे। घरे चार हर के जोत रहे, दुआर प पाँच सई घोड़ा बान्हल रहे। बाप मुखिया हो गइल रहन। बाड़ा चलती रहे। रमरतिया के रूप त उनका आँखि में पहिलही से गड़ि गइल रहे। ऊ रमरतिया से बतिआवे के जुगुत सोचते रहन कि ओह दिन सुजनी जुटिये गइल आ रमरतिया के मुसुका देला से मनसा पूरे के असो मन में अंगइठी लेवे लागल रहे।

दोसरका दिन जब फेर रमरतिया उनुका खेत में धरती के फूल खाती गइलि त ऊहो ओकरा पाछा-पाछा खेत में समा गइले। उनुका त भरम बाले तुरला के रहे, सोचत जात रहन कि हमहूँ अपना हाथे कुछ बाल तुरके दें देव जेह से ओकर डर छूट जाई आ ऊ रोज-रोज बलिया का लालच से आवे लागी। बाकी त उनुका बड़ा अचम्हा भइल जब देखले कि रमरतिया मसुरिया के बाल ना-तुरिके निहुरल हाऊ-हाऊ धरती के फूल उखाड़ि-उखाड़ि गोझनवटा भरि रहल बीया। निहुरला पर ओकरा असली रूप के झलक देखि के महेसर के आँखि के आगा चकचौन्ही छा गइल आ आँखि मधुमाछी अस रूप का लासा में सटि गइली स। टकसे के नाँवे ना ल स।

चारूओर कठबासीन मसुरिया लागल रहे, ओह बीच में दूगो नवहिन के मन में ना जाने कवन-कवन उफान उठत रहे। महेसर का बुझाइल जे निहुरि के देखला से रमरतिया के जवानी के रूप अउर फरिछ लउकी, एसे ऊहो निहुरि के धरती के फूल उखाड़ि-उखाड़ि ओकरा अँचरा में भरे लगले। रमरतिया एकर कवनो दुख ना मनलसि। महेसर के मन बढ़ि गइल। मोका आछा देखि के ऊ अपना मन के मोटरी खोलि देले -''हमनी के जोड़ी बड़ा आछा रही खाली तोहरा तनिका भर साहस से काम लेवे के बा। गाँव - जवार केहूके कुछ ना बसाई। 'मरदा-मउगी राजी, त का करिहें गाँव के काजी।' रहि गइल जाति के बात, त अब जाति-पाति कवनो चीज नइखे रहि गइल। आ फेर हमरा बाबूजी का सोझा आँखि उठा के देखे के केकरा गुरदा बा।'' महेसर के आँखि ओकरा

जवानी के फूल लोढ़त रही स। धरती के फूल अँचरा में ना जाके कतना भुईंया गिर जा स, ओकरा के ना देखत रही स।

रमरतिया कुछ ना बोललि, मुसुका के मुंडी गाड़ लेलसि। बोलो त का बोलो, ऊ त अपन मन देवनाथ क दे चुकलि रहे। भले देवना गरीब रहे, बाकी रमरतिया के मन त होकरा लिखा गइल रहे। रमरतिया बेमन के सभ कुछ सुनत जात रहे। एहतरे कई दिन महेसर ओकरा से बतिआवले आ तै कइले कि कातिक का पुनवासी के हमनी का गठ-जोरांव क लीजा। जब-जब बात होखे, रमरतिया हँ, भा ना कुछ ना बोले खाली मुसुका के मुड़ी गाड़ लेवे। महेसर का पूरा बिसवास हो गइल कि ऊ राजी बीया। ई बात ऊ अपना मतारी का जरिये बापो के जनवा देले। बाप त असमान में उड़ लगले कि बड़ के बेटी हमरा घर में आ रहल बीया। खुसी में फुलल पहुँचले रमरतिया का बाप लगे आ बिआह का इंतजाम-बात खातिर दू सइ रोपयिा दे अइले। रमरतिया के बापो सोचले-"ठीक बा, बिना हरानिये परे-सानी के बोझा उतर जाता। रहल जात-पात के बात, त अब ई के देखता।"

रमरतियो का ई बात मालूम हो गइल।

देवाली के दोसरका दिन राति क महेसर का दुआर पर "राखी" सिनमा देखावल जात रहे जन समपरक विभाग का ओर से। रमरतियो अपना सखीन का साथे देखलसि। ओमें रहे-"एगो राजा एगो राजा का बेटी प लट्टू होके ओकरा के ज त ले ओके बले सादी करे खातिर दल-बल का साथ चढ़ि आइल रहे। लइकिया एगो दोसरा राजकुमार के चाहत रहे। लइकिया चुपे से ओकरा तमु में गइलि आ सुतले में ओकरा के राखी बान्हि देलसि। रोली के टीका करत खाँ ऊ जागि गइल। लइकिया कहलसि- 'भइया, राखी के बकसीस द !'

लइकिया के चिन्ह के ऊ सन्न हो गइल आ पाँच गो असरफी ओकरा हाथ में देके कहलस- "आजु से तू हमार धरम के बहिन बाडू आ ओकरा सादी में आके ऊ लावा मेरवलस।" रमरतिया का बुझाइल जइसे कुछ मिल गइल।

दोसरा दिन गोधन कुटाइल। रमरतिया धरती के फूल लेबे महेसर का खेते के जाये लागलि त अँचरा का खुटा में बजड़ी, रछेया आ पुरिया में रोरी बान्हि लेलसि। महेसर जब लगे आके कहे लगले कि सादी बड़ा धूमधाम से होई, बाबूजी खूब जोर-सोर से तैयारी कर रहल बाड़े। तबले रमरतिया उनका हाथ धके रछेया बान्हि के टीका के देलसि आ बजड़ी मुँह में डाल देलिस।

महेसर का काठ मार देलस। बगली में से एक रोपेया के नोट निकालि के ओकरा अँचरा का खुँट में बान्हि देले। अब महेसर के नजरि धरती का फूल प रहे, ओकर रूप पर ना। ओंही सभ सर-सरजामे रमरतिया के बिआह देवनाथ से हो गइल।

अभ्यास

1. रमरतिया मन से केकरा के चाहत रहली?
2. रमरतिया के बाबू जी कवना चीज के सवखीन रहस?
3. गोधन कुटइला के बाद रमरतिया का कइली?
4. राखी बंधला आ बजड़ी खइला का बाद महेसर का कइले?
5. रमरतिया के बियाह केकरा से भइल?
6. दोसरा दिने रमरतिया के फूल तूरे गइला पर महेसर का कइले?
7. राखी पर्व पर आपन अनुभव लिखी।

शब्द-संपदा

सवखीन - फैशन पसंद करनेवाला

बुझनउक - बूझेवाला

अँटकर - अंदाज लगावल

टिसुना - इच्छा

गाहे-बेगाहे - कबो-कबो

हाऊ-हाऊ - जल्दी-जल्दी

छरहर - दूबर-पातर लमहर